महिला खिलाडियों की चुनौतियाँ

(इक्कीसवीं सदी दूसरे दशक के हिन्दी सिनेमा के विशेष सन्दर्भ में)

यूँ तो समाज में खेल को हमेशा से ही समय व्यतीत करने का एक साधन भर ही माना जाता रहा है,यानि टाइम-पास का बेहतरीन तरीका मात्र | 'मन नहीं लग रहा' या 'करने के लिए कोई काम नहीं है' या फ़िर 'समाज में प्रचलन'अथवा फ़ैशन अन्यथा 'बोरियत से निपटने का एक तरीका' भर मानकर खेल की तरफ़ आकर्षित होते लोग तो प्राय: देखे गए हैं,मगर इसे अपनी आजीविका बनाकर जीवन पूरा इसके लिए समर्पित करने वाले विरले ही थे | भारत में राज-परिवारों में भी समय काटने के लिए, कुछेक महिलाओं का रुझान शौकिया खेलों की तरफ़ देखा जा सकता है | संभवत: इसी लिए दूसरे ऑलम्पिक में ''पुरुष-निर्णायक-मण्डल द्वारा महिलाओं को कमज़ोर मानते हुए उन्हें सभी खेलों में भाग लेने की अनुमति न देकर केवल उन खेल आयोजनों में भाग लेने की अनुमति दी थी जिन्हें स्त्री-खेल माना जाकर महिलाओं के खेल आयोजनों के रूप में जाना जाता था |''(क्रीडाऑन-नवम्बर-23/2021-आयुषी भट्टी)

अपनी पुस्तक,'खेल सिर्फ़ खेल नहीं है',में प्रभाष जोशी लिखते हैं,''क्रिकेट या कोई भी खेल इस देश में किसी ज़िम्मेदार या समझदार आदमी का समर्पित और सम्मानित जीवन कर्म होने के योग्य नहीं माना जाता था | बचपन में खेलो,जवानी में शगल की तरह लो और फ़िर काम धन्धे से लग जाओ | खेल की तरफ़ यह हमारे समाज का पारम्परिक और सर्वव्यापी रवैया है |''1 'कोढ में खाज', -खेलने वाली अगर महिला हुई तो क्या कहिए.....कहने को कुछ नहीं बचा रह जाता | कहते हैं ना, सत्यानाश का सवा सत्यानाश | .....न केवल परिवार ,समाज,देश या संपूर्ण व्यवस्था ही इसमें स्त्री को हाशिए पर सरकाती नज़र आती है, बल्कि कभी कभी तो स्वयं महिला भी खुद को कुसूरवार मानकर अजीब से अपराध बोध की ग्लानि में सुलगती दीख पडती थी | सिमोन द बोवुआर कहती हैं,'' स्त्रियाँ प्राय:सोचती हैं कि एक स्त्री के लिए इतना ही बहुत है | वे आगे जाने की कोशिश नहीं करती ,अपने क्षेत्र में बेमिसाल होने की कोशिश |.....वे एक अपराध बोध महसूस करतीं हैं | पुरुषों के लिए ऐसा कोई सवाल नहीं उठता | उन्हें कोई कैरियर अपनाना ही होता है |****स्त्रियाँ अपने आप में ही अलग-अलग मान्यताओं में बँटी हुई हैं | फ़िर उन्हें कभी परिवार तो कभी समाज निरुत्साहित करता है | अगर वे स्वतन्त्रता और एक कैरियर का चुनाव करतीं हैं तो उन्हें एडवेन्चरस''या ऐसा ही कोई नाम दे दिया जाता है | ''

एथेन्स 1896 में किसी महिला को अपनी भागीदारी निभाने लायक तक नहीं समझा गया था | समय के साथ स्थितियाँ बदलने लगी | पहली बार फ़ीमेल एथलीट के रूप में 1900 में स्विटज़रलैण्ड की हेलेन डे पोर्टेल्स (Helene de pourtales) ने ना केवल ऑलम्पिक खेल में भाग लिया बल्कि विजेता टीम की मेम्बर के रूप में 'प्रथम महिला ऑलम्पिक चैम्पियन' के तौर पर खेलों के इतिहास में अपना नाम भी दर्ज़ करवाया | पहली भारतीय महिला के रूप में नीलिमा घोष ऑलम्पिक खेलों में भाग लेने वाली रही | हेलसिंकी 1952 के ऑलम्पिक में 4 महिलाओं और 60 पुरुषों की टीम में नीलिमा घोष के अलावा मैरी डिसूज़ा सेकीरा, डॉली नज़ीर और आरती साहा भी शामिल थीं | कालान्तर में इन्हीं में से मैरी डिसूज़ा को 2013 में खेल का सर्वोच्च - ध्यानचन्द पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया था |

यूनेस्को के इन्टरनेशनल चार्टर ऑफ़ फ़िज़िकल एजुकेशन एण्ड स्पोर्ट की पहली धारा में कहा गया है कि शारीरिक प्रशिक्षण और खेल हर-एक का मौलिक अधिकार है | पर ये 1978 से पहले नहीं था | 1979 में महिलाओं की खेल में भागीदारी का अधिकार औपचारिक रूप से जोड लिया गया | 1995 के बीजिंग सम्मेलन में हुई घोषणा के आधार पर, '' खेल महिलाओं की बराबरी और सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण औजार है | ''(कुमुदनी पति 3 अगस्त 2021-news click)

प्रथम भारतीय महिला क्रिकेट टीम कप्तान के तौर पर कर्नाटक की शांता रंगास्वामी ने 1976 से 1991 के बीच टेस्ट क्रिकेट से वुमन इन्टरनेशनल तक खेला | मगर सच्चाई तो ये ही है कि

बीसवीं शताब्दी भारतीय महिला खिलाडियों की सदी थी ही नहीं | उस समय कुछ विरली शख्सियत ही खेल जगत में अपना स्थान बना पाई थीं |

भारतीय महिला खिलाडियों ने लम्बी संघर्ष-यात्रा के बाद कुछ हासिल किया है, वो भी तब, जब महिलाओं की ही एक प्रतिनिधि ने बगैर किसी तरह की सहायता या आरक्षण की बैसाखी के अपनी उपस्थिति अन्तर-राष्ट्रीय खेल-जगत में दर्ज कर दी | 1984 में पी*टी* उषा का प्रदर्शन प्रशंसनीय रहा |

सिडनी 2000 खेलों में कर्णम मल्लेश्वरी ने महिलाओं के भारोत्तोलन में कांस्य जीतकर ऑलम्पिक में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला का स्थान प्राप्त किया | भारत की सबसे सफ़ल महिला टेनिस खिलाडी सानिया मिर्ज़ा शुरूआती दौर में महिला एथलीटों के बीच एक प्रेरणा बनकर उभरीं थीं | 2012 के लंदन ऑलम्पिक में बैडमिन्टन में साइना नेहवाल और मुक्केबाज़ी में मैरी कॉम ने कांस्य जीतकर महिला खिलाडियों की दशा और दिशा को बेहतर करने का प्रशंसनीय कार्य किया | रियो 2016 में तो भारत के सम्मान की रक्षा करने में महिला-खिलाडियों का ही योगदान रहा था..... चूंकि बैडमिंटन में पीवी सिंधु ने रजत, और कुश्ती में साक्षी मलिक ने ही कांस्य पदक हासिल किया था | दीपा करमाकर ने जिमनास्टिक में शानदार प्रदर्शन कर नयी संभावनाओं के झरोखे खोल डाले थे | पुरूषों की कोई टीम किसी तरह का कमाल या जमाल इसमें नहीं दिखा पाई थी | बावजूद इसके, महिला खिलाडियों को पग-पग पर अपनी योग्यता की अग्नि-परीक्षा देकर भी अपेक्षित सम्मान और अधिकार नहीं मिल पाया है|

भारत की उडन परी के नाम से पहचानी जाने वाली पी* टी* उषा हो या नई उडन परी कहलाने वाली हिमा दास,मीराबाई साईखोम चानू,रानी रामपाल, या ऐसे ही अन्य जुझारु महिला खिलाडिओं का उदाहरण देखें, सभी ने अपनी अपनी लडाई लडी हैं और अलग अलग चुनौतियों का डटकर सामना किया है | आज खेल जगत में महिला खिलाडियों की कमी नहीं,गोल्फ़र शर्मिला निकोललेट, नेटबॉल में प्राची तेहलन, शतरंज की तानिया सचदेव, रेसलर-सोनिका,बास्केटबॉल की आकांक्षा सिंह, बैडमिंटन की ज्वाला गुट्टा,क्रिकेटर प्रिया पूनिया, मुक्केबाज़ जमुना बोरो आदि के नाम उल्लेखनीय हैं | खेल मैदान की महिला महारथियों से संबद्ध "एक सर्वे में उत्तरदाताओं ने दिग्गज मिताली राज को अपने प्रदर्शन से महिला क्रिकेट को खेल की सुर्खियों में बनाए रखने के कारण सिर आँखों पर बिठाया "तो 'हाल ही राष्ट्र मण्डल खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली न* वन महिला खिलाडी पी*वी* सिन्धु को उनके पूर्व कोच पुलेला गोपीचन्द ने 'भारत की महान एथिलीटों में से एक बताया |" मिताली राज ने दो दशक से अधिक लम्बे करियर के बाद हाल ही में सन्यास लिया है | राष्ट्र मण्डल खेलों में भारत के लिए स्वर्ण पदक का खाता खोलने वाली भारोत्तोलक मीराबाई चानू और उप-कप्तान स्मृति मंधाना ने भी अपनी पोज़ीशन कायम रखी है | "(इण्डिया टुडे- 24 अगस्त 2022-सुहानी सिंह-पृ*50) हाल ही में तलवारबाज़ी

में भी भारत की आधुनिक युग की जुझारू भवानी देवी ऑलम्पिक में अपनी उपस्थिति दर्ज़ करवाते हुए खेल हारकर भी लोगों का दिल जीतने में कामयाब हो गईं | चैन्नई की भवानी ने अपने प्रदर्शन से एक बार फ़िर, ''खूब लडी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी'' की याद दिला दी | 26 जुलाई 2021 भारतीय तलवारबाज़ी के इतिहास का स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने वाला दिन हो गया | खेल जगत में सबसे प्रतिष्ठापित 'ऑलम्पिक' में 'तलवारबाज़ी'-फ़ेसिंग प्रतियोगिता शुरुआती दौर से ही अस्तित्व में रही है,मगर अब तक जिस प्रतियोगिता को कोई भारतीय क्वालिफ़ाई नहीं कर पाया उसे एक महिला-खिलाडी ने अपनी चीते सी चुस्ती और फ़ुर्ती से क्वालिफ़ाई करते हुए 'ऑलम्पिक तलवारबाज़ी' में 'प्रथम भारतीय' का सेहरा अपने माथे सहज बँधवा डाला | अपनी इस कामयाबी को हासिल करने के बाद दिए साक्षात्कार में उन्होंने जो कहा वो हमारे खेल जगत में महिलाओं की स्थिति का एक प्रामाणिक दस्तावेज़ बन सकता है- ''जब मैंने खेलों में हिस्सा लेने के लिए दाखिला लिया तो हम सभी को समूहों में बाँटते हुए 5 अलग खेलों में से एक को चुनने के लिए कहा गया था | और मज़ेदार बात ये थी कि अंत में मेरी बारी आई तो तलवारबाज़ी ही एकमात्र पहला और अंतिम खेल-विकल्प बचा हुआ था | ''

इनके साथ साथ महिला खिलाडियों में आज लम्बी छलांग लगाने वाली अँजू बॉबी जॉर्ज,डिस्कस थ्रोअर सीमा पूनिया और कृष्णा पूनिया, ,पहलवान साक्षी मलिक, क्रिकेटर स्मृति मन्धाना, पहलवान दीपा करमाकर,हॉकी की रानी रामपाल, कुश्ती में विनेश फ़ोगाट, निशानेबाज- हीना सिद्धू, अपूर्वी चन्देला और मनु भकर,टेबिल टेनिस की मणिका बत्रा आदि उल्लेखनीय हैं |

आँकडे बताते हैं कि राष्ट्रीय और अन्तर-राष्ट्रीय स्तर पर कुछ वर्षों से महिलाओं की खेल-जगत में भागीदारी में बढोत्तरी हुई है | खेल मंत्रालय की रिपोर्ट के आधार पर पिछले 5 वर्षों में लगभग 160% की अभिवृद्धि दर्ज़ की गई | ललित जोशी ने अपने 'बॉलीवुड पाठ' में लिखा है कि इक्कीसवीं शताब्दी विगत शताब्दियों से एक महत्वपूर्ण दृष्टि से भिन्न है -वह अपने दामन में अनेक तस्वीरें तथा ध्वनियाँ समेट कर लाई है |***फ़र्क केवल इतना है कि वर्तमान शताब्दी में उन्हें सजाने-संवारने तथा संरक्षित और इस्तेमाल करने की अद्भुत क्षमता है |''2 इसीलिए शायद पी*वी* सिंधु विज्ञापनों की दुनिया में भी पहली बार महिला खिलाडी के रूप में अपनी उपस्थिति दर्जा करवाकर सबसे ज्यादा कमाने वाली महिला खिलाडी बनकर उभर सकीं हैं |

संभवत: यही कारण है कि महिला खिलाडियों पर केन्द्रित बॉलीवुड में बनी हिन्दी फ़िल्मों में सभी फ़िल्में इसी इक्कीसवीं शताब्दी की ही हैं - फ़िर चाहे 2007 की बनी 'चक दे इण्डिया' हो या 2014 की 'मैरी कॉम'',या फ़िर ''2016 की 'दँगल' या 'साला खडूस', 2018 मे बनी 'सूरमा', 2019 की 'साँड की आँख', 2021की 'साइना' और 'रश्मि रॉकेट', 2022 की 'शाबाश मित्तू' ही हो | 2007 की बनी 'चक दे इण्डिया', 2016 की 'दँगल' या 'साला खडूस', और 2018 मे बनी 'सूरमा'- ये सभी फ़िल्में नायक-केन्द्रित

फ़िल्में थीं | हालांकि इनमें से सूरमा को छोड दें तो शेष सभी फ़िल्मों में महिला खिलाडियों की समस्याओं का चित्रण भी बखूबी किया गया है | अभी एक और नई फ़िल्म ''चकदा-एक्सप्रेस''महिला क्रिकेट टीम की सबसे तेज गेंदबाज झूलन गोस्वामी पर बन रही है | यूँ हिन्दी सिनेमा के इतर बात करें तो बांग्ला में 1984 में बनी ''कॉनी'' फ़िल्म इसी तरह की फ़िल्म है | 2002 में बनी ''फ़ुटबॉल शुटबॉल हाय रब्बा'' पंजाबी में बनी फ़िल्म है,जो महिला खिलाडी की पारिवारिक चुनौती पर आधारित फ़िल्म है | इसके अलावा नेटफ़िलिक्स डॉक्यूमेन्ट्री ''लिमिटलेस'',टी*वी* डॉक्यूमेन्ट्री ''स्काई डान्सरस'', स्पैनिश फ़िल्म ''लॉरेना'',रेस्लरस पर बनी 2012 की ''फ़ाइटिंग विथ माई फ़ेमिली'', ''शेडो बॉक्सरस''के साथ साथ, धर्म द्वारा महिला को खेलने से रोकने के कारण सांस्कृतिक नियमों और स्थानीय मान्याताओं को चुनौती देने वाली महिला खिलाडी की कहानी पर बनी फ़िल्म ''न्यू जनरेशन क्वीन्स'' आदि महत्वपूर्ण फ़िल्में हैं |

फ़्रांसिसी मनोविज्ञानी जॉक्स लाकाँ लिखते हैं कि हम वास्तविक को तो कभी जान नहीं पाएँगे क्योंकि वह हमसे आँखे बचाकर निकल जाता है |''3 ''जिसे हम वास्तविक समझते हैं वह केवल उसका पुतला है |''4 'महिला खिलाडियों की चुनौतियाँ'-विषय के सन्दर्भ में मुझे यही बात अक्षरश: सही लगती है | फ़िल्में उनकी वास्तविक मुश्किलों और प्रतिकूलताओं की वास्तविकता को कितना दिखा पाती हैं, यह तुलना का दीगर विषय हो सकता है | फ़िर भी किसी आलोचक के शब्दों का सहारा लेकर कहूँ तो ''सिनेमा अपने समय को चयनात्मक तरीकों से दर्ज करते हुए दोबारा रचता है | इस लिए वह बीते यथार्थ की पुन: प्रस्तुति का लेखा-जोखा अथवा दस्तावेज बन जाता है | (बॉलीवुड पाठ-ललित जोशी-पृ*1)

बहरहाल अब हम मूल विषय पर आते हैं | हमारा विषय है-'महिला खिलाडियों की चुनौतियाँ और इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक का हिन्दी सिनेमा' | 2014 की 'मैरी कॉम'', ''2016 की 'दँगल' और 'साला खडूस', 2019 की 'साँड की आँख', 2021 की 'साइना' और 'रश्मि रॉकेट', 2022 की 'शाबाश मित्तू' पर ही ये शोधालेख केन्द्रित रहेगा |

1 महिला खिलाडियों की व्यक्तिगत चुनौतियाँ -

1*1 व्यक्तिगत शारीरिक चुनौतियाँ - तीन प्रमुख रोग मुख्यत: महिला खिलाडी की समस्या के रूप में सामने आते हैं -

1 ऑस्टोपेरोसिस 2 एमनोरिया (रज:स्वला या माहवारी), 3 इटिंग डिस-ऑर्डर (भोजन संबंधी विकार)- 3*1 एनोरेक्सिया नर्वोसा (कम खाना) 3*2 बुलिमिया-ज्यादा खाना

इन चुनौतियों के साथ, प्रजनन या 'मातृत्व संबंधी' व्यक्तिगत जिम्मेदारी और व्यक्ति विशेष की बीमारी को लेकर भी संवेदनात्मक रवैया अपनाया जाना चाहिए | फ़िल्मा ''शाबाश मित्तू' में 'एमनोरिया'

या रज:स्वाला की समस्या से जूझती नायिका की दवाईयों का पाउच खो जाता है | उसकी रेगिंग लेती शेष खिलाडी लडकियाँ उसके बिना दवाई के ब्लैक आउट हो जाने के डर से उसका सामना कराने कराती हैं और कप्तान उसे खेलने के लिए बैट थमा देती है |

हाल ही में ब्रिटेन की तेज़ धावक दीना अशर स्मिथ को पीरियड्स में पिंडली की ऐंठन की वजह से रुकने के कारण उन्हें अपनी दौड और खिताब दोनों ही हारने पडे | इसी अक्सर बेहतरीन प्रदर्शन करने वाली महिला भी अचानक खेल जगत को अलविदा कर जाती है | कारण है कि उनकी ऐसी नितान्त व्यक्तिगत समस्याओं के कारण वो भीतर ही भीतर बेहद संघर्ष कर रही होती हैं | इसे समाज में पूरी संवेदनशीलता के साथ डील किया जाना चाहिए | चीन की टेनिस खिलाडी जेंग किनवेन फ्रेंच ओपेन में अपनी माहवारी के कारण मैच ही हार गई | ये हार उन्हें शारिरिक के साथ साथ मानसिक रुप से भी तोड डालती है क्योंकि,पिछले 16 मैचों में एक सेट भी न हारने वाली और इसी खेल के पहले सेट में विरोधी को काँटे की टक्कर देने वाली जेंग, माहवारी के कारण पेट दर्द और थकान से पस्त होकर 46 गलतियाँ करके हार बैठती है | विश्व की सुप्रसिद्ध गोल्फ़ खिलाडी न्यूजिलैण्ड की लीडिया ने अपनी एक प्रतियोगिता के बीच पीरियड के कारण हो रहे दर्द की खुली चर्चा करके काफ़ी सराहनीय कार्य किया |

फ़िल्म ''शाबाश मित्तू'' में भी इसी समस्या को दिखाया गया है |

मातृत्व से जुडी स्वाभाविक स्थितियाँ भी खिलाडी के लिए अक्सर चुनौती सी बन जाती है | ऐसी ही स्तानपान की समस्या को झेलती कनाडा की किम गोचर के सामने हाल ही में ये स्थिति आई | ऑलम्पिक आयोजकों ने इस पर ये कहा कि,'' खेलों के दौरान कोई किसी का दोस्त नहीं,कोई परिवार नहीं |'' अपने सपने और ममत्व के बीच उलझकर ये महिला खिलाडी क्या अपना सौ प्रतिशत देकर खेल पाएगी ??? भारत की मणिपुर के छोटे से गाँव की तीन बच्चों की माँ मैरी कॉम ने वर्ल्ड चैम्पिअन बनने

के सफ़र में खुद से भी कितना संघर्ष किया होगा,यह सहज कल्पना की जा सकती है !!!

फ़िर भी महिला खिलाडियों ने अपनी इस चुनौती का सामना अपने दम-खम से किया है | चिकित्सा और तकनीक की प्रगति से महिला समस्याओं के समाधान की आवश्यकता है | महिला होने के कारण स्त्री को कुछ प्राकृतिक समस्याओं का सामना भी करना पडता है | संभवत: इसी के मद्देनज़र स्त्रियाँ खेल जगत में पदार्पण से भी बचती रहीं हैं |

विकलांगता की चुनौती - शारीरिक अक्षमता को भी धत्ता बताकर जांबाज महिला खिलाडियों ने नतीजों की परवाह न करते हुए भयहीन प्रदर्शन किया | पैरा बैडमिंटन खिलाडी मानसी जोशी हो या पलक कोहली ऐसी सच्चे अर्थों में शक्तिमान महिलाएँ स्त्री समाज की प्रेरणा हैं | मानसी जोशी ने अपने एक साक्षात्कार में कहा था,'' प्रेक्टिस के दौरान पाँव में रैशस और सूजन का बढना तो आम बात थी,मगर मैंने कभी हार नहीं मानी | मेरे पास दूसरा विकल्प भी नहीं था |''

आज विकास की इस तीव्र गति के चलते इस समस्याओं का समाधान शीघ्रता से ढूँढा जाना होगा | फ्रेंच ओपेन में विश्व टेनिस की नम्बर वन खिलाडी इगा स्वांतेक के द्वारा ये मुद्दा उठाया गया कि इस क्षेत्र में शोध की महती आवश्यकता है | खेल विज्ञान की दृष्टि से इसे प्राथमिकता से देखा जाना होगा |

1*2 व्यक्तिगत मानसिक चुनौती-

मानसिक स्वास्थ्य की कोई सुनिश्चित परिभाषा तो नहीं दी जा सकती है | फ़िर भी इसे नेति-नेति के अनुसार ही मानसिक विकार की अनुपस्थिति के रूप में बेहतर तरीके से समझ सकते हैं | विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार,'' सलामती की एक स्थिति जिसमें व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का एहसास रहता है | वह अपने जीवन के सामान्य तनावों का सामना करने में समर्थ होता है और समाज में लाभकारी और

उपयोगी रूप से काम करते हुए अपना योगदान प्रदान करने में सर्वथा सक्षम होता है |'' मानसिक विकारों की बात करें तो 'अवसाद', दुश्चिन्ता,ऐग्साइटी आदि आम प्रचलित शब्द हैं तो दूसरी ओर विखण्डित मानसिकता,द्वि-ध्रुवी मानसिकता आदि भी अलग तरह की मानसिक बीमारियाँ हैं |

महिला खिलाडियों को बेहतर प्रदर्शन और अपनी छवि को और माँजते रहने के दबाव के साथ,अन्यान्य तरीकों के विविध प्रेशर भी खूब झेलने पडते हैं | इससे उनके शारीरिक और मानसिक दोनों ही तरह के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव देखा जा सकता है | अपने प्रदर्शन, खेल की माँग,देश के प्रतिनिधित्व का भार, असफ़लता का भय सभी मिलकर पेशेवर जोखिम को सुरसा के मुख की तरह विकराल बना देता है |

कोरोना या ऐसी ही किसी वैश्विक महामारी से शारीरिक या मानसिक रूप से प्रभावित होकर खिलाडी को भीतर से कमजोर कर देता है | चोट या डोप टेस्ट के कारण खेल से निकाले जाने वाले खिलाडी के मानसिक द्बाव की विकरालता का आलम ये है कि वो खुद ही खेल जगत को अलविदा कह देता है | नावोमी ओसाका जैसी महान खिलाडी के शब्दों में मेरे लिए मानसिक स्वास्थ्य सबसे अधिक महत्वपूर्ण है और मैं इससे समझौता नहीं कर सकती |''(डाउन टू अर्थ-02 जून 2021 -अनिल अश्विनी शर्मा)उन्होंने पेरिस में चल रहे टूर्नामेन्ट में पहला राउण्ड जीतने के बाद भी खुद को खेल से अलग कर लिया था | उन पर 1500 डॉलर का जुर्माना लगाया गया तो भी उनके मानसिक स्वास्थ्य के साथ खिलवाड ही हुआ | एथलीटस फ़ॉर होप के आँकडे के अनुसार वर्तामान में 35% बडे खिलाडी मानसिक स्वास्थ्य संकट से जूझ रहे हैं | इग्लैंड की महिला क्रिकेट टीम की विकट कीपर बल्लेबाज़ सारा टेलर ने अन्तर-राष्ट्रीय क्रिकेट से सन्यास लेने के बाद खिलाडियों के मानसिक स्वास्थ्य से जुडी समस्याओं को लेकर एक चर्चा की बात की है | खेल विशेषज्ञ राकेश थपलियाल का कहना है, '' एक खिलाडी को पिछले एक साल के दौरान अनगिनत बार कोरोना टेस्ट से गुज़रना पडता है | ऐसे में उनका मानसिक सन्तुलन ही गडबडा जाता है | उन्हें हर बार ऐसी चिन्ता सताए रहती है कि कब पॉजिटिव आ जाएगा और वह टूर्नामेन्ट से बाहर हो जाएगा | ऐसी मानसिक प्रताडना आज दुनिया के हर खिलाडी को झेलनी पड रही है |

ऐसे में महिला फ़र्राटा रेस 100 मी* की चैंपियन दुतीचन्द ट्रेनिंग को पॉज़िटिव रहने से जोडती हुई कहती हैं,''इस दबाव के बीच पॉज़िटिव रहने के लिए एक ही रास्ता है कि थोडी बहुत ट्रेनिंग घर में ही करते रहें | इसी सन्दर्भ में भारतीय महिला क्रिकेट टीम की पूर्व कप्तान अंजुम चोपडा बताती हैं कि, ''चर्चा करना बेहद ज़रुरी होता है,क्योंकि बात करने से हरेक व्यक्ति अपना दृष्टिकोण रखता है,जो चुनौतियों से निपटने में मदद करता है और जब असली मैच में ऐसे हालात सामने आते थे तो आसानी से हैंडल कर लिया करती थी |''

अंजुम ये भी मानतीं हैं कि पेशेवर मनोवैज्ञानिक की मदद काफ़ी कारगर साबित हो सकती है |

विश्व प्रसिद्ध खिलाडी के साथ खेलते हुए स्वयं पर हो रहे मानसिक द्बावों को भी खिलाडी को खुद ही झेलना होता है | ''बर्मिंघम में मिशेल ली के खिलाफ़ फ़ाइनल में खेलने से पहले आपके दिमाग में क्या चल रहा था .....पूछने पर पी वी सिन्धु ने कहा, '' मैने अपना 100% लगा दिया | अगले प्रश्न में सिन्धु होने के दबाव से निपटने के तरीके, को लेकर हुए सवाल पर उनका कहना था, ''दबाव और जिम्मेदारियाँ तो रहने ही वाली हैं | पर मेरे ख्याल से अहम ये है कि कोर्ट में पहुँचने पर आप अपने बारे में सोचें और स्वाभाविक खेल ही खेलें | लोगों के हिसाब से खेलने की कोशिश पर आप अपने ऊपर और भी दबाव ओढ लेंगे |'' (दूसरों की इच्छा पूरी करने को क्यों खेले ?''- शैल देसाई-पृ*114-'इण्डिया-टुडे'- वर्षा 36; अंक39,25-31 अगस्त-2022) संभवत: इसी जीवट के कारण शारीरिक क्षमता में कम आँकी जाने वाली महिला खिलाडी आज अपने मानसिक संबल के बल पर विश्व भर में अपना परचम लहरा रही है |

* 2 पारिवारिक चुनौती-

परिवार की समस्याओं की चुनौतियों के बीच किसी लडकी की लिंग-असमानता,कन्या-भ्रूण हत्या,बाल-विवाह,पर्दा-प्रथा,स्त्री-शिक्षा की कमी,आर्थिक निर्भरता,उचित पोषण का अभाव,गरीबी, संसाधनों का अभाव,सामजिक-सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों की बेडिया जैसे अनेक जंजालों के बीच खेल-जगत में आने की इच्छा ही अपराध बन जाती है | ऐसे अनेक नदी-नालों ,खाइयों को पार कर महिला खिलाडियों का जुझारू व्यक्तित्व बडी मुश्किलों से दैदीप्यामान होकर अपनी चमक से दुनिया को आद्योतित कर पाता है | खेल-जगत के ऐसे दैदीप्यामान सितारों में महिला क्रिकेट टीम की झूलन गोस्वामी से लेकर एक गरीब दलित

रिक्शा चालक की बेटी एकमात्र भारतीय तीरंदाज दीपिका कुमारी तक अनेक महिला खिलाडी के नाम लिए जा सकते हैं | लम्बे चौडे 17 लोगों के परिवार में जन्मी आज की उडन परी हिमा दास को खेल के अभ्यास के साथ-साथ खेतों में बुवाई का अपना दायित्व भी निभाना पडता था | ऐसे असंख्य नाम आज खेल जगत की आन बान और शान हैं,जो अपने पारिवारिक दबावों के बावजूद अपने हौंसलों की उडान के बल पर आसमान की बुलन्दियों को छू रहीं हैं | ऐसे नामों में कुरुक्षेत्र के मजदूर की बेटी महिला हॉकी टीम की कप्तान रानी रामपाल,हरियाणा के गरीब किसान की बेटी भारतीय टीम की दीवार कही जाने वाली गोलकीपर सविता पूनिया,बस का सफ़र करके खेलने के लिए शहर आने के लिए भी पैसे न जुटा पा सकने वाले गरीब किसान की बेटी लालरेम सिआमी,नक्सल प्रभावित क्षेत्र झारखण्ड की निक्की प्रधान,उत्तराखण्ड के दलित परिवार की वंदना कटारिया,उडीसा के जनजातीय परिवार की दीपग्रेस एक्का,हरियाणा के मैकेनिक की लाडली नवजोत कौर, लोगों के घरों में बर्तन माँजने वाली विधवा माँ की बेटी नेहा गोयल,गुरजीत कौर आदि हैं | (ND TV.in)

'साँड की आँख'

3 सामाजिक चुनौतियाँ-

समाज द्वारा खींची गई लक्ष्मण रेखा 'सीता' ने हमेशा पार की है | महिला खिलाडियों के संबंध में भी यही सत्य है | पुरुषों के प्रभुत्व वाले खेलों के क्षेत्र में स्त्रियों का प्रवेश बहुत सहज या सरल नहीं था | मगर अपने जुझारु व्यक्तित्व के तेज से स्त्री ने पुरुषों तक परिसीमित क्षेत्रों में भी अपनी बेजोड क्षमताओं और अपराजेय शानदार जीत से देश को वैश्विक पटल पर गौरवान्वित किया है | जबकि हमेशा से ही पुरुषों और महिलाओं को दिए जानी वाली सुविधाएँ और अवसर की तुलना करें तो

उसमें पाया जाने वाला भेदभाव हमेशा सालता है | पुरुषों के लिए सुनहरे अवसर सुरक्षित होते हैं तो महिलाओं को घर और बाहर सभी जगह अपनी क्षमताओं और प्रतिभा की अग्नि-परीक्षा देकर भी अन्ततः अक्सर 'वनवास' ही उनकी नियति बन जाती है | फ़िर भी महिला ने कभी हार नहीं मानी | समाज द्वारा पीडित,प्रताडित,अपमानित,वंचित,हीन,अनुपयुक्त,घर की चार-दीवारी में परिसीमित रखने के बावजूद महिलाओं ने अपनी जिजीविषा और दृढता के साथ निरन्तर अपनी लगन,धैर्य और मेहनत के बल पर विजय-श्री हासिल की |

कुछ ऐसा ही हुआ है फ़िल्म दँगल में- सामाजिक वर्जनाओं से दो-दो हाथ करने का नाम ही है - दँगल | सदियों से चली आ रही सोच कि पुरुषों के इस खेल में स्त्री का प्रवेश तक वर्जित है'जैसे तमाम प्रतिरोधों को नेस्तानाबूद करती इस फ़िल्म में, स्त्री को ही शक्ति बनाकर पावरहाउस या ऊर्जा-केन्द्र के रुप में उभरता हुआ दर्शाया है | पुरुषत्व के प्रति सनक की हद तक,समाज स्वीकृत अहमन्यता की ग्रंथि को इस फ़िल्म के माध्यम से तोडने की ईमानदार कोशिश की गई है | इन्सानी दृष्टि ही नहीं दिमाग के भी सिकुडने का जो मायोपिया अब तलक समाज में नियंत्रक भूमिका में सक्रिय था, उसका लेज़र ऑपरेशन और पूरा ट्रीटमेन्ट बगैर किसी शोर-शराबे के सहज ही हो चला है |''स्त्रियाँ कुश्ती नहीं लडती'-ये टेबू तोडता गीता और बबीता का कर्मठ व्यक्तित्व इस फ़िल्म में देखा जा सकता है | ''दँगल''फ़िल्म उनकी श्रम साध्य जीवन यात्रा का साक्षी बनकर सामने आई है |

दँगल-

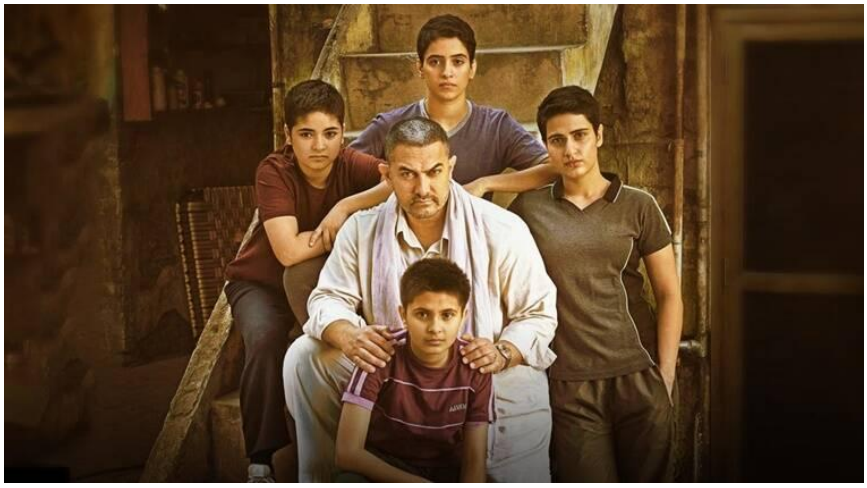

कई बार लगातार बिना ब्रेक के ही क्वार्टर फ़ाइनल तो कभी सेमी फ़ाइनल जैसे नज़दीकी मुकाबलों के साथ साथ खुद भी चोटिल हो जाते हैं या शरीर भी साथ छोडने लगता है | उस दौरान सपोर्ट या उपेक्षा का मिलना खिलाडी की जिन्दगी का निर्णायक मोड बन जाता है | एक इन्टरव्यू के दौरान सिन्धु का इस विषय में जवाब था, ''दर्द तो पैरों मे था ही,लेकिन मेरे फ़िज़ियो और मेरे ट्रेनर मेरी हर तकलीफ़ दूर करने

के लिए वहाँ मौजूद थे | उन्होने मुझे अगले दिन के मैच के लिए तैयार करने के लिए पक्का इन्तजाम किया |''(वही) मगर हमेशा खिलाडी को ऐसा सहयोग और सकारात्मक माहौल नहीं मिल पाता है |

कुल मिलाकर लैंगिक असमानता, स्त्री-उपेक्षा, जातिवाद,गरीबी,लिंगभेद,पितृसत्ता,सामाजिक कुरीतियाँ,कुत्सित मानसिकता,यौन उत्पीडन आदि जैसी सामाजिक समस्याएँ महिला खिलाडी के लिए स्पीड ब्रेकर की मानिन्द हैं,महिला खिलाडी के विकास की गति को रोकने या बाधित करने की कुचेष्टाओं का उन्मूलन किया जाना जरुरी है |

4 यौन उत्पीडन की चुनौती-

इस चुनौती का सामना महिला को हर युग में करना ही पडा है | उत्तर-पूर्वी लडकियों के साथ तो कुछ ज्यादा ही ज्यादती होती है | उन्हें सेक्स-ऑब्जेक्ट के रुप में देखा जाता है | अक्सर खेल अधिकारी या कोच के विरुद्ध यौन उत्पीडन की शिकायत को भी नजर अन्दाज ही कर दिया जाता था | तमिलनाडू के पी* नागराजन की शिकायत के बाद कई महिलाओं ने कहा था कि इस व्यक्ति ने हमारे साथ भी ऐसी हरकत की थी | इस तरह के अन्याय से डरकर महिलाएँ स्वयं भी चुप्पी साध लिया करतीं थीं | यौन उत्पीडन से संबंधित शिकायतों और समाज में आ रही जागरुकता के कारण इसकी ओर अब सहानुभूतिपूर्वाक समाधान की दिशा में विचार किया जा रहा है | भारतीय खेल प्राधिकरण प्रातियोगिताओं में महिला प्रातिभागी होने पर एक महिला को कोच दल में शामिल किया जाना अनिवार्य कर दिया है | यौन-उत्पीडन का एक उदाहरण -

साला खडूस

इस दृश्या में आप देख रहें हैं जहाँ नायक खेल प्राधिकरण के एक दुष्टा अधिकारी को उसकी चरित्राहीनता से उद्वेलित होकर पीटने पर आमादा हो जाता है |

5 आर्थिक चुनौती- अर्थहीन गरीब परिवारों की योग्य महिला को खेल जगत में आने के लिए बहुत संघर्ष करना पडता है | जहाँ दैनन्दिन की ज़रुरतों के लिए ही संघर्ष करना पडता हो वहाँ खेल-प्रतियोगिताओं में भाग लेने का सपना पालने की इजाजत कहाँ हो सकती है ??? रानी रामपाल के पिता की आय मात्र 80 रुपया थी जिससे कि भरपेट रोटी के ही लाले पडे हुए थे ; ऐसे में हॉकी स्टिक खरीदकर खेलने की प्रैक्टिस करना कितना मुश्किल रहा होगा !!! मुक्केबाज़ जमुना बोरो की विधवा माँ सब्जी बेचकर अपने परिवार चलाती थीं | मैरी कॉम का बचपन भी अभावों से संघर्ष के साथ ही बीता था | बचपन में मैरी ने सबसे पहले अपने घर भर की जरुरतों को पूरा करने की जद्दोजहद में ही एक बॉक्सार से मुकाबले की चुनौती को बिना सोचे समझे स्वीकार कर लिया था,जबकि उस ताकतवर प्रातिदव्न्द्वी को देख उसकी ललकार पर सारे पुरुष भी सहमे हुए खडे थे-

मैरी कॉम-

लिंगाधारित भेदभाव की समस्या सभी खेलों के साथ है | इस समस्या के लिए समाज की मानसिकता दोषी है | इसी के चलते महिला खिलाडियों को अन्तर-राष्ट्रीय मैच खेलने का मौका ही बहुत कम दिया जाता है | रियो ऑलम्पिक के लिए महिला हॉकी टीम द्वारा क्वालिफ़ाई करने के बावजूद पुरुष टीम की तैयारी पर आए खर्चे की तुलना में उसका 10 फ़ीसदी भी महिला टीम के हिस्से नहीं आया | इसके पीछे वही पुरातन पंथी सोच काम करती है कि महिलाओं पर खर्चा क्योंकर किया जाए | मुझे मेरे बचपन का वाकया याद आता है.....हमारे पडौस की दादी मेरी माँ को अक्सर ये कहते हुए डाँट दिया करती थी,'' अरे अनु की माँ ! बावळी छ: कंई ; छोरियां ने दूध पिळाबा तांई क्यों पीट् री छ: ?.....छोरयां आगळे घरां जाशी,तन्ने कांई फ़ायदो होषी !!! ई पिषा ने राखल्यो दायजा में दे दीजो | उनकी सोच यही थी कि ये तो दूसरे घर जाएगीं इसलिए इन पर खर्चा करना बेकार है,इनकी हर काबिलियत का फ़ायदा तो उसके ससुराल वालों को ही होगा |

बहरहाल 2015-16 के अनुबँध सूची में जहाँ धोनी,विराट कोहली आदि को 1-1 करोड मिले, वहीं मिताली राज,झूलन गोस्वामी,हरमन प्रीत आदि के हिस्से 15-15 लाख ही आए | बी*सी*सी*आई का पुरुषों का 'B'वर्ग 50 लाख का तो महिलाओं का 10-10 लाख था | वेतन, पुरस्कार,भेंट या ईनाम के नाम पर पुरुषों को कभी 5 साल तक देश में मुफ़्त विमान यात्रा तो कभी आवासीय फ़्लैट तो आजीवन 1st क्लास में रेल यात्रा जैसे न जाने कितने उपहार दिए जाते हैं | प्रतिभावान महिला खिलाडी को तराशने की कोई व्यवस्था नहीं | इस पर ये सफ़ाई दी जाती है कि महिलाओं का खेल कौन देखना चाहता है ? '' दलील दी जाती है कि उन खेलों को कोई नहीं देखता जिन्हें महिला खिलाडी खेलतीं हैं | ***** इसीलिए स्पॉन्सर भी एक मुद्दा बना हुआ है | ''(19 अप्रैल 2019-जनसत्ता)''कुश्ती ,बैडमिंटन जैसे व्याक्तिगत खेलों को छोड कर महिलाओं के लिए कोई पेशेवर लीग शुरू नहीं की गई है |'' (वही) भारत में इनाम की राशि में असन्तुलन के प्रतिरोधस्वरूप दीपिका पल्लिकल ने लगातार 4 वर्षों तक राष्ट्रीय खेलों में भाग न लेकर अपना विरोध दर्ज़ कराने का प्रयास तो किया,मगर बाद में उन्हें ये समझ आ गया कि इस मुद्दे पर अगर वे अडी रहतीं हैं तो नुकसान सिर्फ़ उन्हीं का ही होगा -''*** ऐसे में खेलने का मौका ही नहीं मिलेगा और पैसे भी नहीं कमा पाएगी |'' यहाँ एक महिला खिलाडी की आर्थिक मजबूरियों का फ़ायदा ही उठाया गया | इनाम और पारिश्रामिक को लेकर हो रहे असन्तुलन का विरोध करते हुए जब स्क्वैश खिलाडी दीपिका पल्लिकल ने आवाज़ उठाई तो नक्कारखाने में तूती की आवाज़ सा, कोई परिणाम नहीं निकल सका | अगर दीपिका का साथ बाकी लोगों ने दिया होता तो शायद कुछ सार्थक परिणाम निकलते | महिला बास्केटबॉल टीम की पूर्व कप्तान शीबा मग्गो का कहना था कि ,''दीपिका जैसा कदम बाकी महिला खिलाडियों को भी उठाना चाहिए था |अगर सभी में एक जुटता बनती तो खेल प्रबन्धन पर दबाव बनता |''

वैश्विक स्तर पर भी ये समस्या जस की तस बनी हुई है | स्क्वैश की ही बात करें तो पुरुष विजेता के लिए सवा तीन लाख डॉलर और महिला विजेता के लिए डेढ लाख डॉलर की इनामी राशि है |

आर्थिक तंगी से जूझकर महिला खिलाडी की जीत का जश्न मनाने वाले समाज और पितृ सत्ता को आत्म-विश्लेषण अवश्य करना चाहिए | 28 मई को दुनिया ने ''विश्व माहवारी स्वच्छता दिवस'' मनाकर अपने कर्त्तव्य की इति-श्री कर ली | इसी समस्या के साथ पैड का खर्चा भी महिला पर एक अलग तरह का बोझ है | जापान,दक्षिण कोरिया,इण्डोनेशिया,ताइवान,जांबिया जैसे मुठ्ठी भर देशों में ही माहवारी का सवैतनिक अवकाश उनकी संवेदनशील राष्ट्रीय नीति का हिस्सा है |

6 बाजारीकरण का चुनौती-

सन 1300 में निवेन्डन केन्ट सिटी में जन्म क्रिकेट 1792 में कलकत्ता में शौकिया खेला जाता था | विकास का परिणाम अब ये हुआ कि हर चीज का मूल्यांकन बाजार की दृष्टि से आँका जा रहा है | 'नए दौर का नया सिनेमा' में प्रियदर्शन लिखते हैं कि,''एक आयाम खेलों की उस दुनिया का दिखता है जिसमें क्रिकेट मेरी तरह के शहरी मध्यवर्ग का शौक,शगल या जुनून भर नहीं रहा ,वह बाजार का उपकरण हो गया है जिसका मकसद एक ऐसा इकहरा राष्ट्रीय जुनून पैदा करना है जिसकी मदद से पेप्सी कोक से लेकर पजेरो-क्वालिस तक बेचे जा सके | '' -नए दौर का नया सिनेमा- प्रियदर्शन पृ* 97-99 महिला खिलाडियों के खेल को लेकर तो ये मानसिकता और भी ज्यादा है | क्रिकेट और हॉकी में भी स्त्रियों को तवज्जो नहीं दी जाती है | एक महिला खिलाडी का कहना है कि फ़िर भी इन्हें अपवाद स्वरूप ही बर्दाश्त किया जाता है |

फ़ैशन इण्डस्ट्री की माँग ही शायद इसका कारण हो सकती है,वहाँ इस तरह की छवि बेचने में ज्यादा आसानी और लाभ होता है | इसके समर्थक परम्परावादी इसे उनके मूवमेण्ट की बाधा से बचाने वाला मानते हैं,जबकि स्वयं महिला खिलाडी इस तरह की बिकनी से आने वाली समस्याओं के चलते इसे अस्वीकार करना चाहतीं हैं | मीडिया और समाज को मर्दवादी मान्यताओं को बदलना होगा ,तभी खेलों में लैंगिक समानता का लक्ष्य हासिल हो सकता है | पत्र-पत्रिकाओं या मीडिया में महिला खिलाडी को तो सुन्दर आकर्षक मगर उत्तेजक पोज़ में दिखाए जाने की मंशा रहती है जबकि पुरुष खिलाडी की फ़ोटो उसकी परफ़ॉर्मेन्स या जझारुपन से चुनी जाती है |

7 खेलतन्त्र के पितृसत्तात्मक नज़रिए की चुनौती-

''टीम लोकतन्त्र'' नामक अपनी पुस्तक में राजदीप सरदेसाई लिखते हैं कि,''क्रिकेट में किसी भी वोट बैंक या आरक्षण की जगह नहीं है - अन्त में सिर्फ़ आपके रन बनाने या विकेट लेने की योग्यता ही

मायने रखती है |'' इसलिए यूँ तो खेल में महिला खिलाडियों की भी खेल संबंधी योग्यता, क्षमता आदि को केन्द्र में रखा जाना चाहिए मगर ज्यादातर उनकी खेल- प्रतिभा और निपुणता को नज़र-अन्दाज करते हुए उनके लुक,दैहिक गठन,त्वचा पर ध्यान ज्यादा केन्द्रित किया जाता है | वस्त्रों से संबद्ध कई नियम भी महिलाओं पर ही लागू किए जाते हैं | सानिया मिर्जा पर उनके वस्त्रों की वजह फ़तवा जारी करके उन्हें गैर इस्लामिक करार दिया |

टोक्यो ऑलम्पिक में जर्मनी की महिला जिम्नास्ट टीम ने महिलाओं के सेक्सुअलाइज़ेशन के खिलाफ़ कडा कदम उठाते हुए अन्य प्रतिभागियों की पारम्परिक बिकनी कट लियो टार्डस की बजाय यूनिटार्ड पहना | 2021 ऑलम्पिक में नॉर्वे की बीच हैंड्बॉल महिला टीम ने जब साहसिक कदम उठाते हुए पारम्परिक बिकनी-ड्रेस को छोड बडे शॉटस पहने | मगर ऐसे ही एक और उदाहरण है जहाँ 2021के टूर्नामेन्ट में बिकनी बॉटम्स में खेलने पर इनकार करने के कारण महिला टीम पर जुर्माना लगा दिया गया | यूरोपीय हैंडबॉल एसोसिएशन के डिसिप्लिनरी कमिशन के अनुसार इंप्रापर क्लॉदिंग के कारण टीम पर 1700 डॉलर का जुर्माना लगाया गया | मुझे लगता है कि वस्त्र व्यक्तिगत पसन्द का विषय है | कपडे वही अच्छे होते हैं जिसमें व्यक्ति सहज महसूस करता हो | और महिला खिलाडी को भी ये अधिकार होना चाहिए वो खेलते हुए भी जो चाहे वह पहने,बशर्ते की उसके कपडे उसके खेल में बाधा ना उत्पन्न करते हों |

'द गार्जियन' अखबार ने स्पोर्ट इंग्लैंण्ड की रिपोर्ट के हवाले से लिखा कि कुछ महिलाओं के सर्वेक्षण में 75% ने बताया कि वे खेलों में भाग तो लेना चाहतीं हैं मगर समाज और मीडिया द्वारा उनके रुप,रंग ,शारिरिक गठन के कारण उनके बारे में राय बना लेने के डर से उन्होंने अपने कदम पीछे हटा लिए |'' ऐसे माहौल में महिला खिलाडी देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए खेल जगत में आने के लिए प्रेरित कैसे होंगी ?

साँड की आँख-

8 मीडिया की उदासीनता की चुनौती - मीडिया अक्सर फ़िल्म स्टार्स को तो पूरी शिद्दत से प्रमोट करता है| मगर महिला खिलाडियों की उपलब्धियाँ,उनके साक्षात्कार,उनके संघर्ष की कहानियाँ,उनकी जद्दोजहद,उनकी चुनौतियाँ आम लोगों तक पहुँचाने में मीडिया की कोशिशे बहुत ज्यादा नहीं होतीं | जबकि अवसर मिलते ही उनका उपहास करने का मौका नहीं छोडा जाता है |

उडन परी हीमा दास की हिन्दी पर तंज कसते हुए मीडिया ने उनकी उपलब्धियों पर ही जैसे प्रश्नचिन्ह लगा डाला था |

2018 की एक खबर थी ,जिसमें नॉर्वे की फ़ुट्बॉलर एडा हेगरबर्ग द्वारा 23 साल की उम्र में ही फ़ुट्बॉल का सबसे प्रतिष्ठित बैलन डिओर पुरस्कार हासिल करने के बाद अवार्ड सेरेमनी की घटना का जिक्र था | ये घटना इस तथाकथित विकसित समाज के कुत्सित नजरिए को प्रतिबिम्बित करती है | उस ऐतिहासिक क्षण में अपना प्रेरणास्पद संभाषण समाप्त करने के बाद तालियों की गडगडाहट के बीच संचालक फ्रेंच डीजे मार्टिन सॉलवेज़ उनसे मुखातिब होते हैं, '' क्या आप ट्वर्क (एक भडकाऊ सा नृत्य) करना जानती हैं ?''

ऐसे ही,महिला खिलाडियों को अक्सर भेदभाव का सामना तो करना ही पडता है | उन्हें अक्सर ऐसे व्यवहार को झेलना पडता है जैसे कि नितान्त नासमझ-अज्ञानी हों | मीडिया द्वारा भी उन्हें पर्याप्त महत्व या सम्मान या कवरेज नहीं दिया जाता,जिसकी कि वे हकदार होती हैं | यूनेस्को के डायरेक्टर जनरल ऑड्रे अजॉले ने कहा था, '' स्पोर्टस मीडिया में सिर्फ़ 4%कॉन्टेन्ट ही महिलाओं के खेलों को दिया जाता है | महिलाएँ सिर्फ़ 12%स्पोर्टस न्यूज प्रस्तुत करती हैं |'' बी*बी*सी* की रिपोर्ट के आधार पर खेल जगत की खबरों में महिला खिलाडियों को 30 फ़ीसद कवरेज कम मिलता है |

9 आदिवासी एवं गामीण महिला खिलाडियों की उपेक्षा- लडकियों को घर का काम ,सिलाई-बुनाई,कढाई ,खाना पकाने या चौका-बरतन तक ही सीमित रखा जाता है | एथेलीट अन्जू पटेल का इस सन्दार्भा में आगे कहना है कि, '' मैं अपने गाँव के एक स्कूल में रोज दौड लगाने जाती थी,तो लोग तरह तरह की बाँते करते थे | कोई ट्ड़ेनर भी नहीं था जो कि सिखाए | हाँ लोग ये जरूर कहते थे कि ये लडकी तो हाथ से गई ; गाँव भर में दौड भागकर न जाने कौन सा झण्डा गाडेगी !!!

लवलीना बोर्गेहन पूर्वोत्तर की बॉक्सर या उडीसा के गरीब परिवार से अपनी गरीबी को मात देकर तेज दौडने वाली दूतीचन्द ने अपनी हर समस्या समेत सभी को पछाड दिया | इस 'गे' एथलीट ने अपने शरीर के पुरुष हारमोन की मात्रा ज्यादा होने के कारण न्यायलय में भी लडाई लडी | इन जुझारु महिलाओं ने नतीजों से बेपरवाह अपने दिल की सुनते हुए अपने स्वप्नों को साकार किया | मीरांबाई चानू बचपन से ही लकडी के मोटे मोटे गठठर ढोते हुए वेटलिफ़्टिंग की महारथी बन गई | गरीब घरों की परिस्थिति से दो दो हाथ करती ऐसी ललनाओं को तव्ज्जो नहीं दी जाती .....उन्हें कई तरह की शारीरिक और मानसिक चोटों से जूझना पडता है ,इसीलिए कोई आना भी नहीं चाहता |ब्रिटिश जर्नल ऑफ़ स्पोर्टस मेडिसन द्वारा ग्रामीणों पर किया शोध बताता है कि ग्रामीण परिवेश में पली-बढी महिला एथलीटों में क्षामता तो बहुत होती है लेकिन अपर्याप्त संसाधनों के कारण वे अपनी शारीरिक क्षमताओं का पूरा प्रयोग नहीं कर पाती | 30 महिला एथलीटों पर किए गए शोध में सामने आया कि 57% महिलाएँ क्रॉनिक एनर्ज़ी डेफ़िशिएन्सी से प्रभावित थी | पोषक तत्वों की कमी और कम वज़न ही इसका कारण है | खेल प्राधिकरण के एथेलेटिक्स जोन के कमल कुमार सिंह का कहना है कि,खिलाडियों को

जितनी जरुरत अभ्यास की है उतनी ही आहार की भी है |लेकिन और देशों की अपेक्षा हमारे यहाँ इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता | यही कारण है कि कुछ प्रतिभाएं सामने नहीं आतीं और कुछ आकर भी पीछे चली जाती है | वो आगे कहते हैं कि लडकी को अभ्यास के बाद बादल गिलास जूस चाहिए होता है लेकिन यहाँ उसे 1 कप चाय दी जाती है | प्रति खिलाडी सरकार सरकारी दिन का सौ रुपया देती है,जिसे अभी बढाकर 130 किया गया, ये भी बहुत कम है |"(गाँव कनेक्शन शृंखला पाण्डेय 6मई 2016)

रश्मि रॉकेट

10बी*सी*सी*आई जैसे सरकारी संग़ठनों में महिला-खिलाडियों को लेकर उदासीनता की चुनौती-

सक्रिय चेतना एवं निष्पाक्षता का अभाव- इस सन्दर्भ में समय समय पर खबरें आती रहती हैं | किन्तु खेल प्राधिकरण बहुत सक्रिय या जागरूक नहीं,फ़िर चाहे उनके विदेश दौरे के अनायास रद्द हो जाने की बात हो या महिला कोच के रिटायर होने पर दूसरे कोच की नियुक्ति का प्रश्न हो ऐसे कई मुद्दे हैं | जबकि पुरुष-टीम को लेकर सभी तरह की सक्रियता और जागरूकता देखी जा सकती है | बल्कि ये कहा जाए कि उनसे सम्बद्ध हर समस्या का शीघ्र समाधान और उनकी जरुरतों के साथ सुविधाओं का भी पूरा पूरा ध्यान मुस्तैदी से रखा जाता है तो कोई अतिश्योक्ति ना होगी | यूँ तो ये माना जाता है कि खेल से बढकर और कोई चीज नहीं जो लोगों को परस्पर गहरे जोडती है | बावजूद इसके महिला खिलाडियों से लिंग के आधार पर होने वाला भेदभाव हमें झकझोरता है |

गोवा की भारतीय महिला क्रिकेट टीम की शिखा पाण्डे ने जिस वक्त क्रिकेट खेला,गोवा के मडगाँव में 40 के दशक में पैदा होकर दो दशकों के लिए भारतीय टीम का हिस्सा बने रहना एक बहुत बडी सफ़लता थी | क्योंकि उस ज़माने में देश के बडे शहर भारतीय क्रिकेट पर राज़ करते थे |" (टीम लोकतन्त्र -राजदीप सरदेसाई पृ*19)

11 महिला खिलाडियों को पुरस्कार की कमी- पुरुषों के मुकाबले महिला खिलाडी को 40% ही पुरस्कार योग्य माना गया है | राजीव गाँधी खेल रत्न अवार्ड 41∗40% हैं तो अर्जुन अवार्ड सिर्फ़ 26∗70 और इससे भी बुरी स्थिति कि ध्यानचन्द अवार्ड मात्र 11∗4 % ही महिलाओं के लिए हैं | द्रोणाचार्य अवार्ड तो 4∗60 हैं क्योंकि महिला कोच तो ना के बराबर ही हैं | राष्ट्रीय ऑलम्पिक समितियों में जाँचा जाए तो 20% ही महिलाएँ हैं |

''खेल में एक आदमी ,उसका समाज,उसका देश, उसकी सभ्यता और संस्कृति प्रकट होती है, इसलिए खेल भी आदमी,समाज और देश को समझने का वैसा ही माध्यम है जैसा साहित्य या राजनीति |'' (खेल सिर्फ़ खेल नहीं है -प्रभाष जोशी - पृ∗31)

अंत में ,समाज को एक सूत्र में बाँधने में कोई चीज इतनी सफ़ल नहीं हुई जितना कि खेलों ने इसे सहज कर दिखा दिया है | नेल्सन मण्डेला ने 1995 के ऐतिहासिक रग्बी वर्ल्ड कप के दौरान साउथ अफ़्रीका में कहा था, '' खेल के पास वो ताकत है जो दुनिया, बदल सकती है | उसके पास लोगों को प्रेरित करने की ताकत है | ∗∗∗वो लोगों को एक कर सकती है,और कोई भी चीज लोगों पर ऐसा प्रभाव नहीं डाल सकती है | ये युवाओं से उसी जुबान में बात करता है, जिसे वो समझते हैं | खेल से तो उस जगह भी आशा का संचार हो सकता है जहाँ हमेशा हताशा का वास रहा हो | नस्लीय बेडियों को तोडने में सरकार से भी ज्यादा ताकतवर खेल साबित हो सकते हैं | '' इसी सन्दर्भ में राजदीप सरदेसाई लिखते हैं कि,'' उस वर्ल्ड कप में जब एक रंगभेद काल के बाद के, उस साउथ अफ़्रीका ने देश की रग्बी टीम की हौंसला आफ़ज़ाई की तो पूरा देश उस खेल के कारण एक हो गया जो कि अभी तक श्वेतों का ही खेल बनकर रह गया था |.....ऐसी ही कुछ संभावनाओं के चमत्कार की आशा से मैं महिला खिलाडियों की चुनौतियों पर समाज का ध्यान आकृष्ट करने की चेष्टा कर रही हूँ ताकि भारतीय समाज में लैंगिक भेदभाव का सफ़ाया हो सके |

श्रीश चन्द्र मिश्र लिखते हैं कि, '' आज भी मानसिकता में कोई बडा बदलाव नहीं आया |'' ऐसे में समाज की आधी आबादी महिला खिलाडी की चुनौतियों के समाधान की दिशा में आवश्यक कदम उठाए जाने होंगें | महिला और बाल विकास मंत्रालय द्वारा 2021 से ऑन लाइन ट्रेनिंग की शुरुआत एक स्वागत योग्य कदम है | इसी तरह TOPS (टारगेट ऑलम्पिक पोडियम स्कीम) एक शानदार योजना है जिसमें वित्तीय बाधाओं को उंघालकर अपना खेल जारी रखते हुए ये अन्तार-राष्ट्रीय खेलों में महिला एथलीटों को खुलकर भागीदारी हेतु सहायक होता है | इस विषय में जागरूकता की अनिवार्य आवश्यकता है | जैसा कि भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) के सौजन्य से महिला खिलाडियों की शारीरिक समस्याओं के मद्देनजर खेल फ़ीजियोथेरेपिस्ट के संचालन में शरीर विज्ञान के विविध चरणों पर ऑनलाइन सेमीनार आयोजित हुआ | महिलाओं को सिर्फ़ बराबर का अधिकार देने के नियम बनाने से कुछ भी नहीं होने

वाला है | उन्हें पूरी नेक नीयत और संवेदनशीलता के साथ प्रोत्साहन देते हुए अधिक अवसर उपलब्ध करवाए जाने होंगे,जिससे वो अपने व्यक्तिगत उन्नयन की दिशा में सक्रिय होते हुए अपने प्रकृति प्रदत्त दायित्वों का भी साथ साथ निर्वहन पूरी निष्ठा के साथ कर सके |

समाज में इस मुद्दे को लेकर चेतना के प्रचार-प्रसार के लिए परिसंवाद,चर्चा-परिचर्चा,साक्षात्कार,जागरूकता-कार्यक्रमों की नितान्त आवश्यकता है,जिससे कि खेल जगत में महिलाओं की स्थिति में पर्याप्त सुधार हो सके और उनकी भागीदारी निरन्तर बढती चली जाए-

ये सच है देर से मिली,मंजिल मिली तो सही

मनाओ जश्न कि कातिल को कातिल तो कहा |

डॉ अनीता नायर

सह-अध्येता

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,शिमला

सन्दर्भ ग्रंथ-

1 खेल सिर्फ़ खेल नहीं है -प्रभाष जोशी- पृ*31

2 बॉलीवुड पाठ (विमर्श के सन्दर्भ)-ललित जोशी पृ*15

3 jacques lacan,the four fundamental concepts of psychoanalysis,seminarII,trans.Alan Sheridan,Harmondsworth,penguin,1979,p.53

4 same p.54

5 टीम लोकतन्त्र -राजदीप सरदेसाई पृ*12